पंचांग श्रवण विमोचन एवं नव संवत्सर स्वागत 2019

दिनांक - 05/0 4/ 2019

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से भारतीय नव संवत्सर का आरंभ होता है | नव संवत्सर के प्रारंभ में धार्मिक कार्यों में प्रवृत्ति एवं वर्षफल के श्रवण की परंपरा रही है |वर्षफल श्रवण हेतु पंचांग ज्ञान आवश्यक है इस परंपरा का निर्वहन करते हुए महाविद्यालय में पंचांग श्रवण एवं विमोचन तथा महिमा का स्वागत कार्यक्रम 05. 04. 2019 को आयोजित किया गया| वह तो कार्यक्रम में गणमान्य ज्योतिर्विद एवं महाविद्यालय के प्राध्यापक तथा विभिन्न संप्रदायों के संत महंत उपस्थित रहे तथा संत महात्माओं के साथ ज्योतिर्विदों ने अपने- अपने विचारों का प्रतिपादन किया | कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रोफेसर भास्कर शर्मा संयोजन डॉ. आलोक शर्मा डॉ. हंसराज शर्मा डॉक्टर रवि शर्मा ने किया तथा कार्यक्रम में आ विद्वानों का स्वागत धन्यवाद ज्ञापन प्रोफेसर शालिनी सक्सेना ने किया तथा वर्षफल श्रवण हेतु पंचांग ज्ञान आवश्यक है| इस परंपरा का निर्वहन करते हुए महाविद्यालय में पंचांग श्रवण एवं विमोचन तथा महिमा का स्वागत कार्यक्रम 05. 04. 2019 को आयोजित किया गया | वह तो कार्यक्रम में गणमान्य ज्योतिर्विद एवं महाविद्यालय के प्राध्यापक तथा विभिन्न संप्रदायों के संत महंत उपस्थित रहे |तथा संत महात्माओं के साथ ज्योतिर्विदों ने अपने- अपने विचारों का प्रतिपादन किया कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रोफेसर भास्कर शर्मा संयोजन डॉ. आलोक शर्मा डॉ. हंसराज शर्मा डॉ. रवि शर्मा ने किया तथा कार्यक्रम में आगे विद्वानों का स्वागत धन्यवाद ज्ञापन प्रोफेसर प्रोफेसर शालिनी सक्सेना ने किया ||

समन्वयक

IQAC

Prof. Shalini Saxena
Convener-IQAC
Govt. Maharaj Acharya Sanskrit
College, Jaipur (Raj.) 302015

भारतीय नूत्नवर्ष 2076 के उपलक्ष्य में

पञ्चाङ्ग-श्रवण

विमोचन एवं नववत्सर स्वागत

05 अप्रैल 2019, गोधूली वेला

आयोजक

राजकीय महाराज आचार्य संस्कृत महाविद्यालय

महात्मा गाँधी मार्ग, जयपुर - 302015 (राज.)
दूरभाष : 0141-2706608 ई-मेल : maharaj.college@gmail.com

पावन-सानिध्य

अनंत श्रीविभूषित श्री स्वामी सम्पत कुमार अवधेशाचार्य जी महाराज

पीठाधीश्वर : गलता गादी, जयपुर, राजस्थान

श्री श्री 1008 महामण्डलेश्वर श्री बालमुकुन्दाचार्य जी महाराज

हाथोज धाम, जयपुर

श्री अंजन कुमार जी गोस्वामी एवं श्री मानस कुमार जी गोस्वामी

ठिकाना मंदिर श्री गोविन्द देव जी, जयपुर

शुकसम्प्रदायाचार्य श्री अलबेली शरण जी महाराज, सरस-निकुंज, जयपुर

महामण्डलेश्वर पद्मनाभ शरण जी महाराज, जयपुर

डॉ. नरोत्तम पुजारी, पुजारी : सालासर बालाजी मंदिर, सालासर, चूरू

आचार्य अनन्त श्याम शरण जी महाराज, जयपुर

गणमान्य ज्योतिर्विद

1. प्रो. रामपाल शर्मा, पूर्व विभागाध्यक्ष, राज. म. आ. सं. म., जयपुर।
2. पं. आदित्य मोहन शर्मा, पंचांगकर्ता : जयविनोद जयपुर पंचांग
3. पं. दामोदर प्रसाद शर्मा, पंचांगकर्ता : पं. बंशीधर ज्योतिष पंचांग
4. पं. चन्द्रशेखर शर्मा

पंचांगकर्ता : ज्योतिष सम्राट् पंचांग

निवेदक

प्राचार्य

प्रोफेसर भास्कर शर्मा 'श्रोत्रिय'

ज्योतिष-विभाग

डॉ. आलोक शर्मा, डॉ. हंसराज शर्मा,
डॉ. रवि शर्मा

प्रोफेसर शालिनी सक्सेना

डॉ. जितेन्द्र कुमार अग्रवाल, डॉ. गोपाल मिश्र, डॉ. शीला चौबीसा, डॉ. इन्दिरा खत्री, डॉ. चेतना पाठक, डॉ. रेखा वर्मा, श्री नमामी शंकर बिस्सा, डॉ. जयशंकर चौधरी, डॉ. कमलकिशोर सैनी, डॉ. लक्ष्मीनारायण शर्मा, डॉ. सीमा जैन, डॉ. शम्भूनाथ झा, डॉ. अशोक पलसानिया, सुश्री पूनम आर्य, श्री राकेश कुमार शर्मा, श्री विनोद कुमार नायक, श्री अभिषेक भारद्वाज, श्रीमती मुन्नी देवी, श्री संतोष मीणा, श्री सुभाष शर्मा, श्री कृष्णगोपाल गुजराती

कालो हि कलनात्मकः

सम्माननीय .....

वेद-वेदाङ्ग की सनातन परम्परा का संरक्षण करने में सक्षम अपरा काशी के रूप में सुविख्यात जैपुर नगरी को कौन नहीं जानता! इसकी स्थापना 1727 ई. में महाराज सवाई जयसिंह द्वितीय के द्वारा की गई। यही नहीं वरन् ज्योतिष शास्त्रीय परम्परा को सुदृढ़ करने के क्षेत्र में जयपुर के महाराजा ने ज्योतिष वेधशाला (जंतर-मंतर) का निर्माण किया। इस वेधशाला के द्वारा खगोलीय (ज्योतिष-शास्त्रीय) ग्रह-नक्षत्रों के गति, युति एवं लय की गणना करने का मार्ग प्रशस्त हुआ। इसी परम्परा को पल्लवित करने की दृष्टि से जयपुर के महाराज सवाई रामसिंह जी द्वारा वेद-दर्शन-न्याय-साहित्य-व्याकरण-धर्मशास्त्र एवं ज्योतिषादि प्राच्य विद्याओं की विविध शाखाओं का संरक्षण एवं संवर्द्धन करने हेतु सन् 1852 ई. में राजकीय महाराज आचार्य संस्कृत कॉलेज की स्थापना की गई। आज यह संस्था भारतवर्ष में संस्कृत एवं संस्कृति के क्षेत्र मे अपने लक्ष्यों की पूर्ति करने हेतु अग्रसर है और यहाँ के उद्भट विद्वानों, राष्ट्रपति सम्मानित आचार्यों एवं मनीषी स्नातकों ने इस महाविद्यालय की प्रतिष्ठा को पुष्ट करते हुए प्रतिष्ठापित किया है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद् (NAAC) द्वारा संस्कृत महाविद्यालयों में सर्वप्रथम इसी संस्था को 'बी' श्रेणी प्राप्त करने का गौरव प्राप्त है।

अध्ययन, अध्यापन एवं अनुसंधान की इस सरणी में धार्मिक व्रत-उत्सवों की तिथियों, ग्रहों के उदयास्त, अधिमास, सूर्य-चन्द्रादि के ग्रहण तथा तिथि, वार, नक्षत्र, योग, करण आदि का सम्यक् दर्शन कराने एवं जनसामान्य के लिए सर्वजनहिताय, सर्वजनसुखाय इस संस्था द्वारा 'महाराज-पंचांगम्' का अद्वितीय प्रकाशन आपके लिए प्रस्तुत है। आशा है सभी निश्चित रूप से लाभान्वित होंगे।

।। जयतु ज्यौतिषम्।।

पंचाङ्ग-फलमश्नुते

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से भारतीय नवसम्वत्सर का प्रारम्भ होता है। सम्वत्सर के प्रारम्भ में किए जाने वाले धार्मिक कार्यों में वर्ष फल के श्रवण की परम्परा रही है। वर्ष फल श्रवण के लिए पंचांग ज्ञान आवश्यक है। वैसे तो प्रतिदिन पंचांग श्रवण किये जाने की शास्त्रीय परम्परा है परन्तु नवसम्वत्सर के अवसर पर चूंकि नवीन पंचांग प्रारम्भ होते हैं इसीलिए इस अवसर पर पंचांग श्रवण की परम्परा विशेष है। वत्सरारम्भ में वर्ष के स्वामी की पूजा का विधान भी प्राप्त होता है। पंचांग श्रवण के फल के सम्बन्ध में शास्त्रों में कहा गया है कि जो पंचांग का ज्ञान रखता है उसे पाप स्पर्श नहीं करता। तिथि श्रवण करने से श्री की प्राप्ति होती है, वार का श्रवण करने से आयु की वृद्धि होती है। नक्षत्र श्रवण करने से पापों का नाश होता है। योग का श्रवण करने से रोग मुक्ति होती है एवं करण का श्रवण करने से कार्यसिद्धि होती है। पंचांग के फल को सुनने से गंगा स्नान का फल प्राप्त होता है। देवालयों में, राजपरिवारों में एवं सन्त समाज में इसीलिए पंचांग श्रवण की परम्परा आज भी है। राजकीय महाराज आचार्य संस्कृत महाविद्यालय न केवल राजस्थान अपितु भारतवर्ष के प्राचीनतम महाविद्यालयों में से अन्यतम है। यह महाविद्यालय प्राच्यविद्याओं के संरक्षण एवं सम्वर्द्धन में सतत क्रियाशील है। महाविद्यालय की समृद्ध ज्योतिषीय परम्परा रही है। इसी समृद्ध परम्परा को परिपुष्ट करते हुए महाविद्यालय द्वारा नवीन सम्वत्सर विक्रम सम्वत् 2076 का पंचांग प्रकाशित किया गया है। इस पंचांग के विमोचन के अवसर पर नवसम्वत्सर की पूर्व सन्ध्या पर पंचांग श्रवण की परम्परा का निर्वहन करने जा रहा है। इस अवसर पर आपकी महनीय उपस्थिति सादर प्रार्थनीय है।

आयोजन स्थल :

राजकीय महाराज आचार्य संस्कृत महाविद्यालय

महात्मा गाँधी मार्ग, जयपुर - 302015 (राज.)

दूरभाष : 0141-2706608 ई-मेल : maharaj.college@gmail.com

पञ्चाङ्ग-श्रवण
विमोचन एवं नवसंवत्सर स्वागत
राजकीय महाराज आचार्य संस्कृत महाविद्यालय